ॐ कैलाशविहारिणेनमः

अथ सूक्ष्मयति सन्ध्योपासनविधिः

साध्य साधन भेदेन, यत्सन्ध्याद्वयमीरितम् ।
तदिदंयतिसन्ध्याया, मेतत्संक्षेपतः कृतम् ॥

*

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमद्दण्डि स्वामी
श्री ओंकारेश्वराश्रम महाराज
श्रीमहंत मधुसूदनमठ दुर्गाकुण्ड, वाराणसी द्वारा संग्रहीत

प्रकाशक

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमद्दण्डि स्वामी
श्री रेणुकेश्वराश्रमजी
ठि० ददाऊ, रेणुका जि० शिरमौर (हिमांचल प्रदेश) उ० प्र०

प्रथम वार सहस्रमेकम् संवत् २०३३ वि०

शिवम्

श्रीमद्दण्डि स्वामी ओंकारेश्वराश्रम महाराज
श्रीमहंत मधुसूदनमठ B.२८/१५ दुर्गाकुण्ड, काशी.

ॐ

* प्रस्तावना *

'यति सन्ध्या' यति वृन्द के लिये कल्पतरु है। इससे अंत:करण निर्मल होकर प्रत्यगभिन्न परमात्म स्वरूप का ज्ञान होता है। तब जीवन्मुक्ति विदेहमुक्ति होती है। सम् उपसर्गपूर्वक 'ध्यै' चिन्तायाम्' धातु से 'सन्ध्या' शब्द निष्पन्न हो, अर्थ है सम्यक् रूप से चिन्तन। इसका श्रेष्ठ साधन 'प्रणव' है एतदालम्वनं श्रेष्ठम् (कठ० १।२।१७) प्रणव-जप व अर्थ की भावना से स्थिति प्राप्त है। इस साधन से साध्य स्वरूपा संध्या प्राप्त है, प्रणव तथा महावाक्य विचार से प्राप्त संभव है। अत: पंचीकरण-प्रणव तथा महा-वाक्य द्वारा एकत्व ज्ञान का वर्णन किया है। एकत्व ज्ञान ही साध्य सन्ध्या है इसका उल्लेख 'परमात्मात्मनोरेकत्व ज्ञानेन तयोर्भेद एव विभग्न: सा संध्या, 'परमहंस०—अर्थात् परमात्मा, जीवात्मा के एकत्व ज्ञान से भेद नाश होना सन्ध्या है। परमात्मा जीवात्मा का अभिन्न ज्ञान दर्शन ही सन्ध्या है। ज्ञान ध्यान भी साधन हैं। ज्ञान का प्रतीक दण्ड भी माना हे इससे दंड तर्पण आदि भी सन्ध्या के अन्त-र्गत है।

भगवान् आद्य श्रीशंकराचार्यजी ने यति वृन्द के हित "पंचीकरण' का निर्माण किया श्रीसुरेश्वराचार्य वार्तिककार आदि ने वेदान्तानुसार 'यति-सन्ध्या' का अनुमोदन किया, अतः सभी मुमुक्षु यतियों को 'संन्ध्या' अवश्य करना चाहिये।

प्राचीन काल 'शारदा मठ' से यति सन्ध्या प्रकाशित हुई थी। उसीके अनुसार अन्य यतियों ने भी 'सन्ध्या' प्रकाशित की है। किन्तु प्रस्तुत 'पुस्तक में अति सूक्ष्म वा सरलता की विशेषता है 'श्रीमत्परमहंस परि० श्री स्वामी ओंकारेश्वराश्रमजी महाराज ने हिन्दी द्वारा सूक्ष्म सरल 'सन्ध्या' में विधि वतलाई है। और 'पंचीकरण' आदि का भी अनुवाद किया है इससे सन्यासियों को 'सन्ध्या' तथा विचार में अधिक सुविधा रहेगी।

श्री महाराज जी ने रेणुका हिमाचल प्रदेश की ओर से इसे प्रकाशित कर अपनी उदारता का परिचय दिया है आशा है अधिकारी लाभ उठावेंगे।

विनीत

माघ कृ० ८ श्री मत्परमहंसपरिव्राजाकाचार्यज्ञानमूर्ति
संक्रान्ति २०३३ वि० **श्री रामेश्वराश्रम दंडी स्वामी**
मूल्य न्यौछावर ठि० वेलगांव, गोपामऊ, हरदोई

—:पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

ब्रह्मर्षि श्री पं० रामानुज पाण्डेय शास्त्री

भारतीय शिक्षा केन्द्र, त्रिवेणी बांध, प्रयाग।

ॐ

सूक्ष्म यतिसन्ध्या

तत्रादौशिष्टाचार प्राप्ताचमनप्राणायामाः द्वादशप्रणवाभिमंत्रित भस्म धारणञ्च ।

वामहस्त में भस्म लेकर निम्न मंत्र पढ़े ।

ॐ अग्निरितिभस्म वायुरितिभस्म जलमितिभस्म स्थलमितिभस्म व्योमेति भस्म देवा भस्म ऋषयो भस्म सर्वं हवाएतदिदं भस्म ।

पुनः निम्न मंत्र से जल मिलावे ।

ॐ मानस्तोके तनये मान आयुषिमानो गोषुमानोअश्वेषुरीरिषः । मानो व्वीरान्रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥

अनामिकामध्यमा तर्जनी से मस्तक कंठ हृदय बाहु आदि में भस्म लगावे ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥

आचमनम् ॥

प्रणव उच्चारण करता हुवा ३ बार आचमन करै ।

प्राणायामः

पूरक, कुम्भक, रेचक प्राणायाम करै, १६ बार प्रणवोच्चारण करते हुए वायु पेट में भरे, यह पूरक प्राणायाम हुवा, ६४ बार प्रणवोच्चारण करते हुये वायु पेट में रोके रहे यह कुम्भक प्राणायाम हुवा। ३२ बार प्रणवोच्चारण करते हुये वायु छोड़े यह रेचक प्राणायाम कहलाता है ॥

मंगलम्

भिक्षूणां पटलं यत्र, विश्रान्तिमगमत्सदा।
तत्रैपदं ब्रह्मतत्त्वं, ब्रह्मात्वंकरोतुमाम् ॥१॥
शुक्लाम्बर धरं देवं, शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनंध्यायेत्, सर्वविघ्नोपशान्तये ॥२॥
सच्चिदानंद रूपाय, कृष्णायाक्लिष्ट कारिणे।
नमो वेदान्त वेद्याय, गुरवे बुद्धि साक्षिणे ॥३॥

आसन-शुद्धि

विनियोग पढ़कर जल छोड़े मंत्र पढ़कर आसन पवित्र करै।

पृथिव्यामेरुपृष्ट ऋषि: कूर्मोदेवतासुतलंछंद: आसने विनियोग:

विनियोग मंत्रः

ॐ पृथ्वि त्वयाधृता लोका देवित्वं विष्णुनाधृता ।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम् ॥

॥ बंदनम् ॥

हृदयेहस्तंनिधाय ब्रह्माद्यशेष गुरुपारंपर्येणयावत्स्वगुरु-पादांबुजंतावत्प्रणौमीतिशिरसि हस्तंनिधाय ॥

हृदय में हाथ रखकर आदि ब्रह्म से सम्पूर्ण गुरु परम्परापूर्वक जब तक स्वगुरु के चरण कमलों को प्रणाम करै, तब तक शिर में हाथ रखे ।

ॐ नारायणाय नमः ॥ ॐ पद्मभवाय नमः ॥ ॐ बसिष्ठाय नमः ॥ ॐ शक्तये नमः ॥ ॐ पराशराय नमः ॥ ॐ व्यासाय नमः ॥ ॐ शुकायनमः ॥ ॐ गौड़पादाचार्ये-भ्योनमः ॥ ॐ गोविन्दभगवत्पूज्यपादाचार्येभ्यो नमः ॥ ॐ श्री शंकराचार्येभ्यो नमः ॥ ॐ पद्मपादाचार्येभ्यो नमः ॥ ॐ हस्तामलकाचार्येभ्यो नमः ॥ ॐ त्रोटकाचार्येभ्यो नमः ॥ सुरेश्वराचार्येभ्यो नमः ॥ ॐ समस्तब्रह्मविद्यासम्प्रदायप्रवर्त्त-काचार्येभ्यो नमः॥ ॐ गुं गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ पं परमगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ पं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ पं परात्पर-गुरुभ्यो नमः ॥ ॐवामस्कन्धे गं गणपतये नमः ॥ ॐदक्षिण-स्कन्धे दुं दुर्गायै नमः ॥ ॐ वाम कुक्षौ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥

ॐ दक्षिण कुक्षौ सं सरस्वत्यै नमः ।। ॐ पं परमात्मने नमः नाभौ ।। ॐ पं परब्रह्मणे नमः हृदये ।।

ततो हृदय कमल मध्ये सर्वं तेजोमयं परब्रह्मस्वरूपं-प्रणवं ध्यात्वा हृदयमालभेत् ।।

प्रणव-विनियोगः

(प्रणव विनियोग पढ़ कर जल छोड़ना चाहिये)

ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छंदः परमात्मादेवता परमात्म स्वरूपं ॐ अं बीजं, ॐ उं शक्तिः, ॐ मं कीलकं मम मोक्षार्थे जपे विनियोगः ।।

ततोऽष्टोत्तरशत जपपूर्वकप्राणायामत्रयंकुर्यात् ।।

स्तवनम्

ओकारं निगमैक वेद्यमनिशं, वेदान्त तत्त्वास्पदं,
चोत्पत्तिस्थितिनाशहेतु ममलं विश्वस्य विश्वात्मकम् ।
विश्व त्राणपरायणंश्रुतिशतैः संप्रोच्य मानं प्रभुं,
सत्यं ज्ञानमनंतमूर्ति ममलं शुद्धात्मकं तं भजे ।।१।।
जगदंकुर कन्दाय, सच्चिदानंद मूर्तये ।
गलिताखिल भेदाय, नमः शान्ताय विष्णवे ।।२।।
यद्बोधादिदं भाति यद्बोधाद्विनिवर्तते ।
नमस्त स्मैपरानंद वपुषे परमात्मने ।।३।।
अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने ।
नमः सदैक रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।।४।।

यदज्ञान प्रभावेण, दृश्यते सकलं जगत् ।
यद् ज्ञानाच्छ्रय माप्नोति, तस्मै ज्ञानात्मने नमः ॥५॥
अनात्मभूतेदेहादौ, आत्म बुद्धिस्तु देहिनाम् ।
सा विद्यातत्कृतौ वन्धस्तन्नाशोमोक्ष उच्यते ॥६॥
बन्ध मोक्षौ न विद्येत नित्य मुक्तस्य चात्मनः ॥७॥

॥ पञ्चीकरणम् ॥

(विचार पंचीकरण का करना चाहिये)

ॐ अथातः परमहंसानां समाधि विधिं व्याख्यास्यामः । सच्छब्द वाच्यमविद्याशवलं ब्रह्म, ब्रह्मणोऽव्यक्तमव्यक्तान्म-हन्महतोऽहंकाररहंकारात्पंच तन्मात्राणि, पंच तन्मात्रे-भ्योऽखिलं जगत् । पंचानांभूतानामेकैकंद्विधा समंविभज्य, स्वस्वार्धं भागं विहाये तरेषु योजनात्पंचधापंची कृतेषुपंची-करणं भवति । 'अध्यारोपाप वादाभ्यां निष्प्रपंचंप्रपंच्यते ।

तत्र पंचीकृत पंचमहाभूतानि तत्कार्यं च सर्वं विराडु-च्यते । एतत्स्थूलमात्मनरिन्द्रियै रर्थोपलब्धिर्जागरितं तदु-भयभिमान्यात्माविश्वमेतत्त्रय मकारः ।

अपंचीकृतपंचमहाभूतानितत्कार्यं च सर्वंसप्तदशकं भौतिकंलिगं हिरण्यगर्भं इत्युच्यते । एतत्सूक्ष्म शरीरमात्मनः करणेषूपसंहृतेषु जागरित संस्कारजः प्रत्ययः स्वप्नस्तदु-भयाभिमान्यात्मा तैजसः एतत्त्रयमुकारः । शरीर द्वयकारण-मात्मा ज्ञानं । साभासमव्याकृतमुच्यते, एतत्कारणशरीर

मात्मनः तच्च न सन्नासन्नापि सदसन्नभिन्नंनाभिन्नं नापि-भिन्नाभिन्नंकुतश्चिन्ननिरवयवं सावयवं नोभयं किन्तु केवलं ब्रह्मात्मैकत्व ज्ञानापनोद्यं सर्वं प्रकारकज्ञानोपसंहारंबुद्धेः कारणात्मनावस्थानं सुषुप्तिस्तदुभयाभिमान्यात्माप्राज्ञः एतत्त्रयंमकारः। अकारमुकारे उकारं मकारे मकारं ओंकारे ओंकारोऽहमेवात्मा साक्षी केवलं चिन्मात्र स्वरूपः; ना ज्ञानं तत्कार्यं च किन्तु नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभावं परमा-नंदाद्वयं, प्रत्यग्भूत चैतन्यं, परंब्रह्मैवाहमस्मि। अहमेव परब्रह्मेत्यभेदेनावस्थानंसमाधिः ॥ ॐ तत्त्वमसि ॥ ॐ अहं ब्रह्मास्मि ॥ ॐ प्रज्ञानं ब्रह्म ॥ ॐ अयमात्माब्रह्म इत्यादि महावाक्येभ्योनित्यशः प्रणवात्मस्थमात्मज्योतिर्हृदिस्थितं चैतन्यमात्रममृतं सोऽहमस्मीति भावयेत्। तत्रकार्योपाधि चैतन्यं जीव शव्द वाच्यम्। कारणोपाधि चैतन्यमीश्वर-पदवाच्यम्। उभयत्र चैतन्य मात्रं लक्ष्यम्। लक्ष्य पदार्थं ग्रहण सामर्थ्येनाखण्डैकरसं ज्ञानं भवति। कार्यंकारणेपरि-त्यज्य यल्लक्ष्यं शुद्धं तद्ब्रह्मोच्यते।

कार्योपाधिरयं जीवः कारणोपाधिरीश्वरः। इतिश्रुतेः।
कार्यंकारणतांहित्वा, पूर्णबोधोऽवशिष्यते ॥१॥शु०र०२।१२

॥ पंचीकरण का भावार्थ ॥

अब परमहंसों की समाधि-विधि व्याख्या सहित कहते हैं। (सृष्टि से पूर्व) सत शव्द से

कथित अविद्या शबल ब्रह्म था। उस ब्रह्म से अव्यक्त की उत्पत्ति हुई यानी ब्रह्म ही अव्यक्त रूप से प्रकट हुआ। अव्यक्त से महत्तत्त्व, महत्तत्त्व से अहंकार, अहंकार से शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पंच तन्मात्रायें हुईं। पंचतन्मात्राओं से सूक्ष्म आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि पंचमहाभूत उत्पन्न हुये। इनसे सब जगत की रचना हुई। प्रत्येक पंचमहाभूत को समान दो भागों में बाँट कर एक भाग को अलग स्थापित करै। दूसरे आधे भाग को पुनः चार भाग करे—इसके चतुर्थांश को पूर्व पृथक् स्थापित आधे-आधे भाग में मिला दे। इस प्रकार आधा भाग एक महाभूत का और चार महाभूतों के उपर्युक्त चतुर्थांश मिलित करने पर पंचीकरण सम्पन्न होता है। अध्यारोप तथा अपवाद द्वारा निष्प्रपंच ब्रह्म को प्रपंच वाला किया जाता है।

वह पंचीकृत पंचमहाभूत और उनके सब कार्य-समष्टि स्थूल-सृष्टि विराट कहाती है। वही व्यष्टि में स्थूल शरीर, कर्मेन्द्रियों-ज्ञानेन्द्रियों के गोलक

और सब विषयों की उपलब्धि जाग्रदवस्था कहाती है। इनका अभिमानी आत्माविश्व है, यह स्थूल शरीर, जाग्रदवस्था और उनका अभिमानी तीनों 'अ' कार हैं।

अपंचीकृत पंचमहाभूत और उनके सब कार्य पंच ज्ञानेन्द्रियाँ, पंच कर्मेन्द्रियाँ, पंच प्राण, मन, बुद्धि सप्तदश तत्त्व भौतिक सूक्ष्म को हिरण्यगर्भ कहते हैं। इससे व्यष्टि में सूक्ष्म शरीर, ज्ञान-कर्मेन्द्रिय, प्राण तथा अंतःकरण और जाग्रदवस्था के संस्कार की वृत्तियाँ होती हैं। इसकी अभिव्यक्ति की स्वप्नावस्था है। इन दोनों का अभिमानी आत्मा तैजस कहाता है। सूक्ष्म शरीर स्वप्नावस्था और उनके अभिमानी तीनों 'उ' कार हैं।

स्थूल-सूक्ष्म दोनों शरीरों का कारण आत्मा-अज्ञान है। उसे साभास अव्याकृत कहा जाता है। इससे व्यष्टि में कारण शरीरात्मा होता है, वह न सत है, न असत्। न सत असत् से भिन्न है, न अभिन्न है। और भिन्न अभिन्न उभय रूप तो हो

ही कहां सकता है ? वह न निरवयव है, न सावयव और न उभय रूप है। किन्तु केवल ब्रह्म तथा आत्मा का एकत्त्व ज्ञान और सर्व प्रकार के ज्ञानों का उपसंहार बुद्धि में तथा बुद्धि का कारण स्वरूप में अवस्थान सुषुप्ति है। दोनों का अभिमानी आत्मा 'प्राज्ञ' है। कारण शरीर, सुषुप्ति अवस्था और उनके अभिमानी ये तीनों 'म'कार हैं।

प्रणव की तीन मात्राओं में 'अ'कार यानी व्यष्टि-समष्टि स्थूल शरीर को 'उ'कार में लीन करे। 'उ'कार यानी व्यष्टि-समष्टि सूक्ष्म शरीर को 'म'कार में विलय करे। 'म'कार यानी व्यष्टि-समष्टि कारण शरीर को आत्मा में विलीन करे। मैं ही आत्मा, साक्षी, केवल चिन्मात्र स्वरूप हूँ। न अज्ञान है, न उसका कार्य है। किंतु नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वरूप, परमानंद, अद्वय, प्रत्यक् भूत चैतन्य परब्रह्म ही मैं हूँ। मैं ही परब्रह्म हूँ। इस प्रकार अभेद रूप से अवस्थिति 'समाधि' है।

वह मैं हूँ, मैं ब्रह्म हूँ, प्रज्ञान ब्रह्म है, यह

आत्मा ब्रह्म है, इत्यादि महावाक्यों से, नित्य प्रणव स्वरूप में स्थित आत्म-ज्योति और हृदय में स्थित चैतन्य मात्र अमृत को 'वही मैं हूँ'—इस प्रकार भावना करे। महावाक्य में कार्योपाधि चैतन्य को 'जीव' शब्द से कहा है। कारणोपाधि चैतन्य को 'ईश्वर' पद से कहते हैं। दोनों का लक्ष्य चैतन्य मात्र से है। लक्ष्य पद के अर्थ-ग्रहण का सामर्थ्य होने पर अखण्डैक रस का ज्ञान होता है। कार्य-कारण के परित्याग करने पर जो शुद्ध लक्ष्य परिलक्षित होता है। वह 'ब्रह्म' कहा जाता है। इसमें श्रुति-प्रमाण है। यह जीव कार्योपाधि सम्पन्न है। और ईश्वर कारणोपाधि सहित। कार्य-कारण उपाधि का परित्याग करने पर पूर्ण ब्रह्म स्वरूप ही अवशिष्ट रहता है।

अथ द्वादशसाहस्रं यथेष्टं वा जपं कुर्यात्।

॥ ततः जप निवेदनं मंत्रः ॥

पुण्डरीकाक्ष विश्वात्मन् मंत्रमूर्ते जनार्दन।
गृहाणेमं जपं नाथ, मम दीनस्य शाश्वत ॥

।। तर्पणम् ।।

ॐ वमित्यमृतवीजेनधेनुमुद्रया जलेऽमृतरूपं ध्यात्वा, प्रणवेन द्वादशवारमभि मंत्र्याष्टोत्तर शतवारञ्च तर्पयेत् ।

ॐ वं अमृत बीज से धेनुमुद्रा बनाकर, जल में अमृत रूप का ध्यान करते हुये, प्रणव से बारह बार अभिमंत्रित कर, एक सौ आठ बार तर्पण करना चाहिये ।

ऋषींस्तर्पयामि । छन्दांसि तर्पयामि । देवतास्तर्पयामि । हृदयदेवंतर्पयामि । शिरोदेवंतर्पयामि । शिखादेवंतर्पयामि । कवचदेवंतर्पयामि । नेत्रदेवंतर्पयामि । अस्त्रदेवंतर्पयामि ।

।। अर्घ्यं दानम् ।।

ॐ आत्मैवेदं सर्वम् (छा० ७।२५।२) ॐ ब्रह्मै वेदं सर्वम् (नृसिंह उ० ७) ॐ सर्वं खल्विदं ब्रह्म (छा० ३।१४।१) इतित्रिवारमंजलिं दद्यात् (तीन बार जलांजलि देवे) ।

।। प्रणवोच्चारेण दण्ड तर्पणम् विधानं च ।।

षड्भिः सुदर्शनं प्रोक्तं, नारायणमथाष्टकैः ।
वासुदेवं द्वादशभिः, गोपालं दशभिस्तथा ।।

चतुर्दशभिश्चानन्तं, अत ऊर्ध्वं न धारयेत् ।
आदौ मूले तथाग्रे तु, पश्चात् ब्रह्म मुद्रके ॥
तदन्तरं पर्व ग्रंथी, एतत्तर्पण लक्षणम् ।

॥ तर्पणम् ॥

ॐ आब्रह्मस्तम्ब पर्यन्तं सर्वेतृप्यन्ताम् ।
द्वादशदण्ड मूलेतु, दण्डाग्रेपि तथैवहि ॥
मुद्रायां द्वादशं प्रोक्तं, प्रतिपर्वेत्रिधामतम् ॥१॥
द्विधालोड्यचमध्येन, मूले प्रोक्तं नवाङ्कितम् ।
अग्रे सप्ताङ्कितं प्रोक्तं, इति दण्डस्य तर्पणम् ॥२॥
शिरः प्रोक्षेणमग्रेण, मूलेन पाद प्रोक्षणम् ।
सुरास्तिष्ठन्तिदण्डाग्रे, दण्डमूले तु पूर्वजाः ॥३॥
प्रतिग्रंथि तु गन्धर्वा, मध्ये तिष्ठन्ति मानवाः ।
अस्माकं ये कुले जाता, नाम गोत्रविवर्जिताः ॥४॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु दण्ड सम्बन्धि वारिणा ॥५॥
यस्यस्मृत्येति समाप्यदिक्पाल गुर्वादींश्च प्रणमेत् ।
ततोभाष्यग्रंथानां श्रवण विधिनाश्रवणादिकञ्चकुर्यात् ॥

दिक्पाल गुरु आदि को प्रणाम करे। पश्चात भाष्य ग्रन्थों को विधि से श्रवण मनन आदि करना चाहिये ।

॥ तुरीय सन्ध्या ॥

ॐ अजपा नाम गायत्री, योगिनांसिद्धिदामता ।
हंस पदं महेशानि, प्रत्यहं जपते नरः ॥१॥

मोहाद्यौ वै न जानाति, मोक्षस्तस्य न विद्यते ।
अजपां जपतो नित्यं, पुनर्जन्म न विद्यते ।।२।।
हकारेण बहिर्यातम्, विशन्तञ्च सकारतः ।
चिन्तयेत्परमेशानि, जीवन्तं पक्षिरूपिणम् ।।३।।
श्री गुरोः कृपया देवि, ज्ञायते जप्यते यदा ।
उच्छ्वास निःश्वासतया वन्धो मोक्षस्तदाभवेत् ।।४।।

।। अजपा जप निवेदनम् ।।

ॐ गतारुणोदयादागाम्यरुणोदय पर्यंतं बहु श्वासानुसार कृत षट् शताधिकैकविंशतिसहस्राजपाजपेन गणेश, ब्रह्म, विष्णु, महेश जीव परमात्मगुरवः प्रीयन्ताम् ।।

गुह्याति गुह्यगोप्त्रित्वं, गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतुमेदेवि, त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।।१।।

।। दण्ड नित्य ग्रहण मंत्रः ।।

उत्तिष्ठोतिष्ठदेवेश, देवानां हितकाम्यया ।
देवस्यारिविनाशाय, सदा मम करे भव ।।१।।

।। दंड स्थापन मंत्रः ।।

तिष्ठत्वं देवदेवेश, तिष्ठत्वं दण्ड दैवत ।
ऋषिभिर्मुनिभिश्चैव, गन्धर्वैश्च समं सदा ।।१।।

।। दंड पतन मंत्राः ।।

उत्तिष्ठोतिष्ठ भगवन्नारायण जगत्पते ।
दंड रूपिण महाविष्णो, प्रसीद पुरुषोत्तम ।।१।।

मातृ पितृ समोदण्डो, भ्रातरो गुरवस्तथा ।
पथि साधनहेतुश्च, ब्रह्म मुद्रेनमोऽस्तुते ॥२॥
विष्णु हस्तेयथा चक्रं, शूलं शिवकरे यथा ।
इन्द्र हस्ते यथा वज्र तथा दंडो भवाद्यमे ॥३॥

॥ यतिपात्र ॥

यतेश्चत्वारि पात्राणि मृब्देणुदार्वलाम्बुमयानि ॥

॥ कमण्डलु-शुद्धयादिकम् ॥

(शौचादि के पश्चात् कमण्डलु शुद्धि हेतु निम्न मंत्र से जल छिड़को)

जलाग्निश्च कराग्निश्च, महाग्निश्चैव सन्निधौ ।
अग्नि त्रय प्रभावेण, शुद्धो भव कमण्डलो ॥१॥
कमण्डलो महातीर्थं, पुण्योदकपरायण ।
अगस्त्यादि मुनिश्रेष्ठै, धृतोऽसि त्वंकमण्डलो ॥
स्नान सन्ध्यादि कृत्येषु, त्वमेकः साधनं मम ॥३॥

॥ यति क्षौरविधिः ॥

मासे मासे गृहस्थस्य, पक्षेपक्षे च यज्विनाम् ।
ऋत्वन्ते मस्करिणां च, यथेच्छं ब्रह्मचारिणम् ॥१॥

॥ भिक्षा प्रकरणम् ॥

प्रवासी यदि संन्यासी, रात्रौ भुञ्जन्न दुष्यति ।
दिवायदि न भुक्तं चेन्नायं दोषः प्रकीर्तितः ॥१॥

ब्रह्मक्षत्रिय वैश्यानां, मेध्यानां भैक्षमाचरेत् ।
द्विजाभावे तु संप्राप्ते उपवास त्रये गते ॥२॥
फलं शूद्रादपि ग्राह्यं, प्राणं रक्षेत्सदायतिः ।
यावदुदरपूर्तिः स्यात्तावद्भैक्षं समाचरेत् ॥३॥
महिषी गौश्चमार्जारीशुनीवाजाप्रशूतिका ।
दशरात्रंनगृह्णीयात्भिक्षातस्यगृहेयतिः ॥४॥
भिक्षा माधुकरी नाम सर्व पाप प्रणाशनि ।
अवधूता च पूता च सोम पानं दिनेदिने ॥५॥

॥ गृहस्थाय ज्ञातव्यम् ॥

यतिर्हस्ते जलंदद्यात्, भिक्षांदद्यात्पुनर्जलम् ।
तदन्नंमेरुणा तुल्यं, तज्जलं सागरोपमम् ॥१॥
यस्य गृहे यतिर्भुंङ्क्ते, तस्य गृहे हरिः स्वयम् ।
यस्यगृहे हरिः भुङ्क्ते, तस्य गृहे जगत्त्रयम् ॥

॥ मण्डलम् ॥

ब्रह्मादयः सुराःसर्वे, वशिष्ठाद्यामहर्षयः ।
मण्डले चोपतिष्ठन्तु, तस्मात्कुर्वीत मण्डलम् ॥१॥
भिक्षानन्तरंपुराणश्रवणेनशेष कालंनयेत्॥इतिसंक्षेप निर्वाहः॥

॥ संन्यासे कस्याधिकारः ॥

यदामनसि संजातं, वैतृष्ण्यं सर्व वस्तुषु ।
तदा संन्यासमिच्छेत, पतितः स्याद्विपर्यये ॥ना०प०।३।१२
यदा तु विदितं तत्वं, परं ब्रह्म सनातनम् ।
तदैक दंडं संगृह्य, सोपवीतांशिखांत्यजेत् ॥१७॥

यस्मिन् शांतिःशमःशौचं, सत्यं संतोष आर्जवम् ।
अकिंचनमदम्भश्च, स कैवल्याश्रमे वसेत् ॥२१॥

॥ आचरणीयधर्मः ॥

कौपीनं युगुलं कंथा, दंड एकः परिग्रहः । ना० प०
यतेः परम हंसस्य, नाधिकं तु विधीयते ॥२८॥
मौनं योगासनं योगंस्तितिक्षैकान्तशीलता ।
निःस्पृहत्वं समत्वं च, सप्तैतान्येक दण्डिनाम् ॥२४॥
स्नानं शौचं तथाभिक्षा, नित्यमेकान्तशीलता ।
यतेश्चत्वारि कर्माणि पंचमंनोपपद्यते ॥१॥
दडगृहणं कृत्वा पुत्रमित्र भ्रात्रादि सम्भाषणं न कुर्यात् ।
अज्ञानाद्भाषणं कृत्वा प्रायश्चित्तेन युज्यते ॥
उपवासमेकं कृत्वा तु प्राणायाम शतं चरेत् ॥३॥

॥ मठाम्नाय मीमांसा ॥

प्रथमः पश्चिमाम्नायः शारदा मठ उच्यते ।
कीटवारः सम्प्रदायस्तस्य तीर्थाश्रमौ शुभौ ॥१॥
द्वारिकाख्यं हि क्षेत्रंस्यात् देवसिद्धेश्वरः स्मृतः ।
भद्रकालीतुदेवी स्यादाचार्यो विश्वरूपकः ॥२॥
गोमती तीर्थममलं ब्रह्मचारी स्वरूपकः ।
सामवेदस्य वक्ता च तत्रधर्मं समाचरेत् ॥
पूर्वम्नायोद्वितीयः स्याद् गोवर्धन मठः स्मृतः ।
भोगवारः संप्रदायो बनारण्ये पदे स्मृते ॥४॥

पुरुषोत्तमं तुक्षेत्रंस्यात् जगन्नाथोऽस्यदेवता ।
विमलाख्याहि देवीस्यादाचार्यपद्मपादकः ॥५॥
तीर्थंमहोदधिः प्रोक्तः ब्रह्मचारी प्रकाशकः ।
ऋगाह्वयस्तस्यवेदः तत्र धर्मं समाचरेत् ॥६॥
तृतीयस्तूत्तराम्नायो ज्योतिष्मान्हि मठोभवेत् ।
आनंदवारोऽस्यविज्ञेयः संप्रादायोऽस्यसिद्धिकृत् ॥७॥
पदानि तस्यख्यातानि गिरि पर्वत सागराः ।
बदरीकाश्रमंक्षेत्रं देवता च स एव हि ॥८॥
देवी पूर्णागिरिः ज्ञेया आचार्यस्त्रोटकः स्मृतः ।
तीर्थंत्वलकनंदाख्यं नंदाख्यो ब्रह्मचार्यभूत् ॥९॥
तस्य वेदो ह्यथर्वाख्यस्तत्रधर्मं समाचरेत् ॥
चतुर्थो दक्षिणाम्नायः श्रृंगेरी तु मठोभवैत् ।
भूरी वाराह्वयस्तस्य संप्रदायः सुशोभनः ॥१०॥
पदानि तस्यख्यातानि, सरस्वती भारती पुरी ।
रामेश्वराह्वयं क्षेत्रं आदि बाराह देवता ॥११॥
कामाक्षीतस्यदेवीस्यात् सर्वं काम फलप्रदा ।
पृथ्वीधराह्व आचार्यः तुंगभद्रेतितीर्थकम् ॥
चैतन्याख्यो ब्रह्मचारी यजुर्वेदस्यपाठकः ॥१२॥
॥ ॐ तत् सत् ॥

॥ संन्यास माहात्म्यम् ॥

संन्यास धारणं कार्यं, विप्रस्य मुक्ति हेतवे ।
योविप्रोधारयेत् दण्डं स वै नारायणः स्वयम् ॥१॥

आतुराणां च संन्यासे न विधि नैंव च क्रिया।
प्रैष मात्रं समुच्चार्यं संन्यासंतत्र पूरयेत् ॥२॥

ये च सन्तान जा दोषा ये दोषा देह सम्भवाः।
प्रैषाग्निर्निर्दहेत्सर्वांस्तुषाग्निरिव कांचनम् ॥३॥

शतंकुलानां पुरतो वभूव तथा कुलानां त्रिशतं समग्रम्।
येते भवन्ति सुकृतस्य लोके येषां कुलेसंन्यसतीहविप्रः ॥४॥

॥ शिवम् ॥

———

मुद्रक—सरयू प्रसाद पाण्डेय, नागरी प्रेस, अलोपीबाग, इलहाबाद।